



NEERAJ®

भारतीय समाज :
छवियाँ एवं वास्तविकताएँ
(Indian Society: Images and Realities)

B.S.O.G.- 171

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

C.B.C.S. (Choice Based Credit System) Syllabus of
I.G.N.O.U.
& Various Central, State & Other Open Universities

By: Vaishali Gupta



NEERAJ
PUBLICATIONS

(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com

Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Content

भारतीय समाज : छवियाँ एवं वास्तविकताएँ (Indian Society: Images and Realities)

Question Paper–June-2024 (Solved)	1-2
Question Paper–December-2023 (Solved)	1
Question Paper–June-2023 (Solved)	1
Question Paper–December-2022 (Solved)	1
Question Paper–Exam Held in February-2021 (Solved)	1-3

<i>S.No.</i>	<i>Chapterwise Reference Book</i>	<i>Page</i>
1.	सभ्यता और संस्कृति	1
	(Civilization and Culture)	
2.	भारत एक उपनिवेश के रूप में	11
	(India as Colony)	
3.	राष्ट्र, राज्य और समाज	22
	(Nation, State and Society)	
4.	भारत का गाँव	30
	(Village of India)	
5.	नगरीय भारत	39
	(Urban India)	
6.	भाषा और धर्म	51
	(Language and Religion)	
7.	जाति और वर्ग	62
	(Caste and Class)	

<i>S.No.</i>	<i>Chapterwise Reference Book</i>	<i>Page</i>
8.	जनजाति और नृजातीयता (Tribe and Ethnicity)	76
9.	परिवार और विवाह (Family and Marriage)	94
10.	नातेदारी (Kinship)	110
11.	वर्ग, सत्ता और असमानता (Class, Power and Inequality)	124
12.	प्रतिरोध और विरोध (Resistance and Protest)	134



**Sample Preview
of the
Solved
Sample Question
Papers**

Published by:



**NEERAJ
PUBLICATIONS**

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2024

(Solved)

भारतीय समाज : छवियाँ एवं वास्तविकताएँ
(Indian Society: Images and Realities)

B.S.O.G.-171

समय : 3 घण्टे]

[अधिकतम अंक : 100

नोट : किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर लिखिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

प्रश्न 1. 'भारत एक सम्मिश्रित संस्कृति का देश है और अनेकता में एकता का प्रतीक है।' वर्णन कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-1, पृष्ठ-3, 'भारतीय सभ्यता की एकता पर विमर्श'

प्रश्न 2. भारतीय समाज पर उपनिवेशवाद के प्रभाव की चर्चा कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-2, पृष्ठ-15, प्रश्न 2

प्रश्न 3. भारत में राष्ट्र-राज्य के उद्भव पर प्रकाश डालिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-3, पृष्ठ-23, 'औपनिवेशिक भारत में राष्ट्र, राज्य और समुदाय'

प्रश्न 4. भारतीय ग्राम की चर्चा, एक सामाजिक इकाई के रूप में कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-4, पृष्ठ-31, 'गाँव एक सामाजिक इकाई के रूप में'

प्रश्न 5. भारत की नगरीय समस्याओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-5, पृष्ठ-43, 'भारत में नगरीकरण के मुद्दे'

इसे भी देखें-भारत में नगरीकरण की समस्याएँ निम्नलिखित हैं-
अत्यधिक जनसंख्या दबाव-ग्रामीण शहरी प्रवास शहरीकरण की गति को तेज करता है। दूसरी ओर यह मौजूदा सार्वजनिक संसाधनों पर अत्यधिक जनसंख्या दबाव पैदा करता है। भारत के अधिकांश शहर अत्यधिक जनसंख्या दबाव के शिकार हैं, जिसके कारण शहर, मलिन बस्तियों, अपराध, बेरोजगारी, शहरी गरीबी, प्रदूषण तथा अन्य कई विकृत सामाजिक गतिविधियों जैसी समस्याओं से ग्रस्त हो जाते हैं।

2. आवास और मलिन बस्तियों की समस्या-शहरी जनसंख्या में हो रही वृद्धि ने अनेक समस्याओं में से आवास की समस्या

अधिक चिंताजनक है। शहरी आबादी का एक बड़ा हिस्सा गरीबी की स्थिति में और अत्यधिक भीड़भाड़ वाले स्थानों में रहता है। भारत में आधे से अधिक शहरी परिवार एक कमरे में रहते हैं, जिसमें प्रति कमरा औसतन 4.4 व्यक्ति रहते हैं। लगभग 65 प्रतिशत भारतीय शहरों के बाहरी इलाकों में झुग्गियों में रहते हैं, जहां लोग एक-दूसरे से सटे छोटे-छोटे घरों में रहते हैं। देश में लगभग 13.7 मिलियन झुग्गी-झोंपडियां 65.49 मिलियन लोगों को आश्रय देती हैं।

3. पारिवारिक विघटन-शहरीकरण के परिणामस्वरूप बड़े परिवार छोटे परिवारों में विभक्त हो गए हैं, इसके अतिरिक्त परिवारों में विवाह-विच्छेद, वृद्धों के साथ दुर्व्यवहार की घटनाओं आदि में वृद्धि हुई है।

4. अनियोजित विकास-एक विकसित शहर के निर्माण मॉडल की तुलना में अनियोजित विकास के कारण शहरों में अमीर व गरीब के बीच प्रचलित द्वंद्व मजबूत होता है।

5. सामाजिक सुरक्षा का अभाव-ग्रामीण क्षेत्रों से नगरों में आने वाले लोगों के पास किसी भी प्रकार की सामाजिक सुरक्षा का अभाव होता है।

6. पर्यावरण समस्या-शहरीकरण में जनसंख्या के लगातार बढ़ते रहने एवं औद्योगिकरण के फलस्वरूप पर्यावरण प्रदूषण तथा अवनयन की नई समस्याएँ उत्पन्न हो गई हैं। महानगरों और शहरों में प्रदूषण का मुख्य कारण, वाहनों एवं औद्योगिक संस्थानों द्वारा निकला विषैला रसायन है।

7. जनांकिकीय असन्तुलन की समस्या-भारत में पश्चिमी देशों की तुलना में शहरी प्रवास की प्रवृत्ति पुरुषों में ज्यादा है, जिसके कारण ग्रामीण क्षेत्रों में उत्पादक पुरुष जनसंख्या में कमी आ रही है।

8. शहरीकरण का महत्त्व-विश्व बैंक के आंकड़ों के अनुसार दुनिया 54 प्रतिशत से अधिक आबादी अब शहरी क्षेत्रों में

QUESTION PAPER

December – 2023

(Solved)

भारतीय समाज : छवियाँ एवं वास्तविकताएँ
(Indian Society: Images and Realities)

B.S.O.G.-171

समय : 3 घण्टे]

[अधिकतम अंक : 100

नोट : किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर लिखिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

प्रश्न 1. भारतीय सभ्यता के अध्ययन के विविध दृष्टिकोणों की चर्चा कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-1, पृष्ठ-1, 'भारतीय सभ्यता को पढ़ने के दृष्टिकोण'

प्रश्न 2. राष्ट्रवादियों द्वारा परिकल्पित भारत के विचार की चर्चा कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-2, पृष्ठ-12, 'भारत में भारतवादी दृष्टिकोण'

प्रश्न 3. भारत में राज्यविहीन समाज के आयामों का वर्णन कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-3, पृष्ठ-22, 'भारत में राज्य रहित समाज'

प्रश्न 4. भारतीय समाज के आत्म-निर्भर लक्षणों का आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए। क्या ऐसी अभिव्यक्ति एक मिथक थी?

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-4, पृष्ठ-30, 'भारतीय गाँव : मिथक और वास्तविकता'

प्रश्न 5. भारत में नगरीकरण के विविध आयामों का वर्णन कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-5, पृष्ठ-39, 'नगरीकरण का विस्तार'

प्रश्न 6. भारतीय समाज में जाति और वर्ग के बीच के संबंध का वर्णन कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-7, पृष्ठ-62, 'परिचय', पृष्ठ-65, 'जाति और वर्ग के बीच का संबंध'

प्रश्न 7. भारत में जनजातियों की मुख्य विशेषताओं को उजागर कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-8, पृष्ठ-79, 'भारत में आदिवासियों की विशेषताएँ'

प्रश्न 8. भारतीय पारिवारिक व्यवस्था में परिवर्तन लाने में किन कारकों का योगदान है? चर्चा कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-9, पृष्ठ-99, 'परिवार और विवाह में परिवर्तन'

■ ■

Sample Preview of The Chapter

Published by:



**NEERAJ
PUBLICATIONS**

www.neerajbooks.com

भारतीय समाज : छवियाँ एवं वास्तविकताएँ (Indian Society: Images and Realities)

सभ्यता और संस्कृति (Civilization and Culture)



परिचय

विश्व में भारतीय सभ्यता का इतिहास सबसे पुराना है। भारत का महत्त्व अपनी सांस्कृतिक विविधता व अनेकता के लिए माना जाता है। भारत में जनसंख्या, भौगोलिक वातावरण, त्योहार, भाषा सभी में विविधता पाई जाती है। भारतीय सभ्यता के अध्ययन हेतु इसके चार वृहत् दृष्टिकोणों को समझना जरूरी है। इतिहास से पता चलता है कि भारत में जनसंख्या के अनेक प्रकार के प्रवसन हैं, जिसके कारण यहाँ प्रजातीय, नस्लीय व धार्मिक विभिन्नता पाई जाती है। यहाँ लोगों के धर्म, वेशभूषा, बोली उनके प्रांत के अनुसार बदल जाती है। यहाँ लोगों में, क्षेत्रों में, जलवायु में विभिन्न प्रकार की भिन्नताएँ पाई जाती हैं किंतु फिर भी ये भिन्नताएँ भारतीय एकीकृत सभ्यता की राह में बाधा नहीं बनी।

अध्याय का विहंगावलोकन

भारतीय सभ्यता को पढ़ने के दृष्टिकोण

सभ्यता की उत्पत्ति लैटिन शब्द 'सिविल' से हुई है जिसका अर्थ है 'नागरिक' या 'शहरवासी'। सभ्यता के अंतर्गत कृषि कार्य, व्यापार, कुछ नियोजित निवास स्थान, अनेक संस्कृति, कला, धर्म तथा कुछ राजनीतिक व प्रशासनिक संरचना आते हैं। सिंधु घाटी सभ्यता भारत की एक प्राचीनतम सभ्यता है जिसके बारे में हमें शिल्पकृतियों और स्मारकों से पता चलता है। भारतीय सभ्यता, इसके समाज व संस्कृति को समझने के लिए असंख्य विद्वतापूर्ण विवरण दिये गए हैं। कोहन (1971) के अनुसार इन विवरणों के आधार पर भारतीय सभ्यता को समझने हेतु चार व्यापक दृष्टिकोण दिये जा सकते हैं जो इस प्रकार हैं—

- सूची-पत्र दृष्टिकोण।
- सांस्कृतिक मूलतत्त्व दृष्टिकोण।
- सांस्कृतिक संचार का दृष्टिकोण।
- भारत को एक प्रकार के रूप में देखना।

लक्षणों का सूचीपत्र बनाना

इस दृष्टिकोण के अंतर्गत जिन लक्षणों, गुणों और अभिलेखन पर भारतीय माना गया हो उनकी आवश्यकता पर जोर देता है। भारत में भौगोलिक पारिस्थितिक, क्षेत्रीय या धार्मिक आधार पर भिन्नता पाई जाती है। जबकि दृष्टिकोण में बल इस बात पर दिया जाता है कि उन लक्षणों व गुणों की सूची तैयार करें जो प्रत्यक्ष रूप से भारतीय या फिर भारतीयता में अंशदान करते हैं।

सांस्कृतिक सार का अध्ययन

इस उपागम में आवश्यक रीति व प्रक्रिया की खोज को प्रधानता दी गई है। शुरू से ही भारत की संस्कृति भारतीय सभ्यता की प्रतिनिधित्व करती आई, किंतु गुण और तत्व नहीं। सांस्कृतिक मूल तत्व से भारत की सही पहचान का पता चलता है, जिसे भारत ने वर्षों के ऐतिहासिक और अनेक अन्य अनिवार्यताओं के कारण आत्मसात किया है। इससे पता चलता है कि भारत को सांख्यिकी रूप से मापा नहीं जा सकता।

सांस्कृतिक संचार का अध्ययन

सांस्कृतिक संचार दृष्टिकोण के अंतर्गत वे सभी तरीकें और 'प्रक्रियाएँ' आती हैं जिसके माध्यम से सभ्यता व्यवस्था के तत्व समाज के विभिन्न स्तर पर हस्तांतरित व संचारित होते हैं। इससे भारतीय सभ्यता की संरचना के एकीकरण का बोध होता है। मानव समाज वैज्ञानिक मैकिम मैरियट (1995) और राबर्ट रेडफिल्ड (1956) ने कार्य सभ्यता के विभिन्न भागों को समझने के लिए

2 / NEERAJ : भारतीय समाज : छवियाँ एवं वास्तविकताएँ

शोध किये। मैरियट ने उत्तर प्रदेश के छोटे से गाँव किशनगढ़ी में त्योहारों पर ध्यान केन्द्रित करते हुए सांस्कृतिक संयोग और वृहत व लघु परंपरा के बीच परस्पर लेन-देन को दर्शाया। रेडफील्ड ने ग्राम्य-नगरीय सततता पर शोध किया और वृहत परंपरा (महान) और लघु परंपरा के मध्य परस्पर क्रिया व संचार की सततता को दर्शाया जो कि दोनों के बीच में सहजीवी व आत्मनिर्भरता के संबंध को दिखाता है।

भारतीय सभ्यता का एक प्रकार के रूप में विश्लेषण करना

इस दृष्टिकोण के अंतर्गत भारतीय सभ्यता को अन्य समुदाय व संस्कृति के विपरीत एक भिन्न प्रकार के रूप में देखा जाता है। जिसमें भारतीय समुदाय को एक पारंपरिक समुदाय के रूप में देखा जाता है जो आधुनिकीकरण की प्रक्रिया का अनुभव कर रहा है और आधुनिकीकरण की प्रक्रिया सांस्कृतिक, सामाजिक व ऐतिहासिक सिद्धांत का वर्णन करती है। इसका लक्ष्य यह है कि उन अलग मूल्यों और पहलुओं को छोड़ दिया जाए जो भारत की संरचना के लिए विशेष हैं किंतु इसका एक प्रकार इस आधार पर बनाए रखें जो इनकी दूसरे समाजों व संस्कृति से समानता या भिन्नता को दर्शाये तथा तब इस भिन्नता का परिक्षण किया जाए। उदाहरण के तौर पर यदि भारत को एक गाँव के समुदाय या कृषक समुदाय के रूप में देखा जाये तो अन्य समुदाय व संस्कृति के साथ तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकेगा। इसके विपरीत भारत को एक जाति समुदाय के रूप में देखना निरर्थक प्रयास होगा क्योंकि भारत के लिए जाति का विचार/घटना एक विशेष तथ्य है, इससे भारत की सांस्कृतिक/सामाजिक की तुलना की संभावना निरस्त होगी।

भारत के भूगोल को समझना

भारत की सभ्यता का इतिहास काफी पुराना है, जो क्षेत्रीय रूप से वृहत परंपराओं और व्यवहार में भिन्नता व विशेष क्षेत्र की सामाजिक संरचनाओं को प्रकट करती है। (कोहन (1971: 7)। भारत की विविधता और क्षेत्रीय विभिन्नता का वर्णन इसकी भौगोलिक भिन्नता के आधार पर किया जा सकता है। इसके अलावा भारत का प्राकृतिक भूगोल इसकी स्थायी ऐतिहासिक, सांस्कृतिक व राजनीतिक स्वरूप की वृहत रूपरेखा की व्याख्या करता है, इसलिए यहाँ के भौगोलिक इतिहास को समझना जरूरी है।

कोहन के अनुसार तीन क्षेत्र हैं जो भारत को मुख्य रूप से विभाजित करते हैं—

1. बारहमासी (Perennial) केंद्रीय क्षेत्र।
2. मार्ग क्षेत्र।
3. एकांत सापेक्ष क्षेत्र।

बारहमासी (Perennial) केंद्रीय क्षेत्र

उपजाऊ नदियों की घाटी, समतल व डेल्टा को बारहमासी क्षेत्र कहा जाता है, ये सभी ऐतिहासिक तौर पर मानव निवास

स्थान, उच्च जनसंख्या घनत्व, राजनीतिक क्रियाकलापों व स्थित राज्य पद्धति के केन्द्र रहे हैं। इन स्थानों पर स्थिर कृषि व्यवसाय तथा हस्तशिल्प माल का केंद्र रहा है। भारत के उत्तर व दक्षिण दोनों में इस तरह के क्षेत्र पहचाने गए हैं। ऐतिहासिक नगर गांधार जो अब पाकिस्तान में है, वो उत्तर भारत में पेशावर के आस-पास नदी के बहाव और समतल क्षेत्र पहले केंद्रीय क्षेत्र के रूप में पहचाना गया। सतलुज-जमुना दोआब तथा गंगा-जमुना दोआब उत्तर के प्रमुख केंद्रीय क्षेत्रों को विकसित किया, इनमें कुरुक्षेत्र-पंचाल, कन्नौज, पानीपत, दिल्ली, आगरा शहर हैं, जिनका राजनैतिक-ऐतिहासिक अतीत बहुत ही सुंदर है। इन सभी क्षेत्रों में भाषा व जलवायु की भिन्नता पाई जाती है, जिससे यहाँ की कृषि पद्धतियाँ भी अलग-अलग हैं। दक्षिण भारत में आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, केरल, महाराष्ट्र और मैसूर, ये पांच केंद्रीय क्षेत्र हैं। आंध्र में तेलुगु भाषा बोली जाती है तथा इसकी संरचना घनी कृषि डेल्टा गोदावरी और कृष्णा नदी का क्षेत्र है। तमिलनाडु पाण्ड्य और चोल राजाओं का है, जोकि आज का मद्रास है और यहाँ तमिल भाषा बोली जाती है। इसमें पेन्नार नदी व कावेरी डेल्टा आती है तथा यह घनी आबादी वाला क्षेत्र है। महाराष्ट्र में मराठी भाषा बोली जाती है, इसकी समानता मैसूर के साथ है, क्योंकि दोनों क्षेत्र सूखी कृषि के लिए जाने जाते हैं। तमिलनाडु से भिन्न दोनों क्षेत्र छितर-बितर निवास स्थान हैं। केरल/मालावार भारत का दक्षिण-पश्चिम भाग है जहाँ नीलगिरी पर्वत शृंखला माला है, यहाँ वर्षा होती रहती है जिसके कारण इसकी एक अलग सांस्कृतिक और सामाजिक संरचना है। यहाँ नायर संप्रदाय की मातृवंशीय व्यवस्था दिखती है, जो यहाँ के प्रमुख निवासी हैं। आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु की भाँति यहाँ गीले धान की कृषि उपज होती है।

मार्ग क्षेत्र

मार्ग क्षेत्र का एक अद्भुत उदाहरण मालवा है जो उत्तर भारत को दक्षिण तट और दक्खन से जोड़ता है। इस क्षेत्र की एक अलग सांस्कृतिक विशेषता है, यह अरावली तट के दक्षिण में स्थित है। यह एक अर्द्ध-शुष्क क्षेत्र है। मार्ग क्षेत्र में एकीकृत और स्थायी राजनीति स्थापित नहीं है। सापेक्ष एकांत क्षेत्र मानवीय निवास के लिए अपेक्षाकृत कम सहायक होता है, जैसेकि लद्दाख की मरुभूमि, जो ऊँचाई पर स्थित है और यहाँ छितरी हुई बसावट है।

सापेक्ष एकांत क्षेत्र

देश का उत्तर का भाग पर्वतों से घिरा है और यहाँ पर अनेक सापेक्ष एकांत क्षेत्र हैं जैसे—

- (i) उत्तरी वृत्तखंड का क्षेत्र जोकि बालूचिस्तान और अफगानिस्तान का सीमांत क्षेत्र है। यहाँ असंगठित जनजाति का निवास है जो इस्लाम धर्म को मानती है।
- (ii) गिलगिट और जम्मू-कश्मीर के आस-पास का क्षेत्र, इसके पास अपूर्व सांस्कृतिक प्रचलन एवं विरासत है, तथा यह क्षेत्र समतल के हिंदुओं से मिलता-जुलता है।

- (iii) हिमालय के आस-पास का समतल क्षेत्र जोकि नेपाल, भूटान और सिक्किम की सीमा तक विस्तारित है तथा वह क्षेत्र जहाँ पर ब्रह्मपुत्र नदी असम में प्रवेश करती है। यहाँ पर दोहरी संस्कृति का प्रभाव है, तिब्बत का बौद्ध धर्म तथा हिंदुत्व जो समतल से प्रसारित हुआ है।
- (iv) उत्तर-पूर्व का पहाड़ी और जंगली क्षेत्र, जोकि भारत और बर्मा के मध्य का भाग है। यहाँ पर अनेक जनजातियों का निवास है जिन पर दक्षिण-पूर्व का प्रभाव दिखता है।
- (v) उत्तर-पश्चिम का एकांत क्षेत्र राजपूताना/मारवाड़ है। 10वीं सदी से यहाँ मुस्लिम आक्रमणकारियों से स्वयं को बचाने के लिए राजपूत तथा अन्य शरणार्थी आकर बस गए, इनकी संस्कृतियों का प्रभाव यहाँ पर रहने वाली जनजातियों पर भी पड़ा।

इसके अलावा केंद्रीय भारत में दो एकांत क्षेत्र हैं—

- (i) विन्ध्य पहाड़ के साथ-साथ, पूर्वी गुजरात, नर्मदा नदी, पूर्वी बनारस का क्षेत्र, जहाँ से कैमूर पहाड़ दिखता है।
- (ii) यह विन्ध्यपर्वत श्रृंखला, उत्तरी महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, उत्तरी-पश्चिमी उड़ीसा एवं दक्षिण-पूर्व बिहार के दक्षिण का पहाड़ी प्रदेश है।

भारत को संरचनात्मक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से देखना

भारतीय सभ्यता की सामाजिक संरचना और संस्कृति पर इसका अत्यधिक प्रभाव दिखाई देता है। भारतीय समाज के इतिहास से पता चलता कि इसकी सामाजिक संरचना और संस्कृति के निर्माण में धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। पौराणिक और धार्मिक अतीत का संबंध राजनीतिक और पौराणिक के साथ है, जैसाकि पवित्र राजपद द्वारा प्रायः वर्तमान राजनीतिक वर्गीकृत तथा संबंधों को उचित साबित करने के लिए आवहन किया जाता है। विभिन्न आक्रमणों, प्रवासन तथा छिद्रित और स्वीकार्य धर्म से भारतीय जनसंख्या में विभिन्नता उत्पन्न की है। संरचनात्मक व सांस्कृतिक दृष्टि से भारतीय सभ्यता को उच्च स्तर पर विभाजित व स्तरित माना जाता है। हिंदुत्व को एक सैद्धांतिक धर्म नहीं माना गया है बल्कि इसे जीवन जीने का एक ढंग माना गया है। उप-महाद्वीप में बहुत से धर्म फले-फूले हैं जैसेकि-बौद्ध, जैन, सिक्ख तथा बह्य धर्म जैसे-इस्लाम और इसाई धर्म को भी स्वीकार किया गया है। आज की सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था ने अतीत की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण रूप ले लिया है; जैसे-जाति-व्यवस्था, वर्ण-व्यवस्था आदि। वर्तमान भारत में व्यक्ति की पहचान उसकी जाति और वर्ण से होती है। धार्मिक अतीत के अलावा संस्कृति की पहचान में नातेदारी समूह व पूर्वजों की पहचान भी विशेष महत्व रखती है। वर्ण व जाति

व्यवस्था नातेदारी व्यवस्था से ऊपर रहती है। समाज में विवाह संबंध वर्ण व जाति के अनुसार बनाये जाते हैं। जिन समाजों में नातेदारी आज भी महत्वपूर्ण महत्व रखती है वहाँ पीढ़ी या खून की शत्रुता का विचार भी चलता है, इसके अंतर्गत ऐसे दो परिवार जिनमें पहले शत्रुता रही हो उनमें विवाह संबंध नहीं हो पाते। नातेदारी और जाति व्यवस्था का प्रभाव सामाजिक गतिशीलता को भी प्रतिबंधित करता है, ये लोगों को उन समूहों तक सीमित रखता है जो वर्तमान की अपेक्षा अतीत से पहचाने जाते हैं। किंतु आधुनिक युग में इस व्यवस्था में परिवर्तन आया है, विशेषकर 19वीं सदी के अंत से जब से राष्ट्रवादी नेताओं ने भारत को एक राष्ट्र के रूप में तथा जनसंख्या को एक इकाई के रूप में पहचान दी है। 1947 में देश के आजाद होने के साथ इसे एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र घोषित किया गया है। भारत में धर्मनिरपेक्षता का अर्थ है सभी धर्मों को एक समान महत्व देना ताकि पश्चिमी राष्ट्रों की भाँति किसी भी धर्म को न मानना। यहाँ राष्ट्रीय चिन्ह बनाने के लिए सभी धर्मों के प्रतीकों का उपयोग किया गया है। इसीलिए झंडे में बौद्ध धर्म के नियम पहिया है। राष्ट्रीय चिह्न शेर से बना हुआ है, जो बौद्ध के राजा अशोक के स्तम्भ से लिया गया है, राष्ट्रीय गान में जन, मन को संबोधित किया गया है जिसका अर्थ भारत के लोग और क्षेत्र से है, जोकि अंतर्निहित विभिन्नताओं के बावजूद भी इसकी एकता को दर्शाता है। राष्ट्रवादी नेता जवाहर लाल नेहरू का विचार था कि भारत को “अनेकता में एकता” का प्रतिनिधित्व करना चाहिए।

भारतीय सभ्यता के एकता पर विमर्श

भारतीय सभ्यता की एकीकृत पहचान हमेशा विवाद का मुद्दा रही है। इस विषय पर इम्ब्री तीन अलग-अलग विचार प्रकट करते हैं। एक समूह उनका है जो भारतीय सभ्यता के एकीकरण को अस्वीकार करते हैं, दूसरे वो जिन्होंने भारत को सभी धर्मों को आत्म-सात करने वाली एकीकृत इकाई के रूप में देखा है। तीसरे समूह में भारत को एक मिश्रित संस्कृति का देश मानने वाले हैं। पहले समूह के विचारक भूगोल समीक्षकों से सहमत हैं जो भारत को ऐतिहासिक रूप से बारहमासी (Perennial) केंद्रीय क्षेत्र द्वारा निर्मित मानते हैं, जिसने इसके क्षेत्रीय भूगोल और सामाजिक-सांस्कृतिक व राजनीतिक इतिहास को बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस दृष्टिकोण के अनुसार भारतीय सभ्यता में पाई जाने वाली विभिन्नता इसके क्षेत्रीय भूगोल की विभिन्नता के कारण ही है। यह दृष्टिकोण क्षेत्रीयता की अवधारणा पर प्रकाश डालता है। हॉबसन-जॉनसन और स्ट्रैची के अनुसार भारत में क्षेत्रीयता की उत्पत्ति औपनिवेशिक शासन के कारण हुई, जिसने भारतीय सभ्यता को एक ताकत प्रदान की, यह औपनिवेशिक विलय के द्वारा कृत्रिम रूप से बनाई गई है। इन सबके विचारानुसार भारत अनेक क्षेत्रों

4 / NEERAJ : भारतीय समाज : छवियाँ एवं वास्तविकताएँ

वाला देश है, इसीलिए यहाँ के निवासियों को भारतीय के रूप में देखना गलत होगा। इस संकल्पना के विपरीत राष्ट्रवादी नेताओं ने भूगोलिक, राजनीतिक, सामाजिक व धार्मिक एकता को यहाँ की सभ्यता की विरासत माना है। इसके समर्थकों का मानना है कि केंद्रीय क्षेत्र के ऐतिहासिक भूगोल को लगातार महत्त्व देने के बाद भी भारतीय सभ्यता वहाँ वास्तविकता में निहित है। तीसरा दृष्टिकोण कि भारतीय सभ्यता को शुरू में अनेकता में एकता का सूचक माना जाता है, यह विचार वीनसेंट स्मिथ की आक्सफोर्ड हिस्ट्री ऑफ इंडिया, 1919 में पाया गया है। दूसरी संस्कृतियों से भारतीय सभ्यता के तुलनात्मक अध्ययन के लिए इसको उपयुक्त उक्ति माना गया है, जबकि एम्ब्री भारतीय सभ्यता के विषय में इस विचार को निरस्त करते हैं। एम्ब्री दूसरे विचार के समर्थन में भारतीय एकता के लिए ब्राह्मणवादी विचारधारा और परंपरा को श्रेय देते हैं। इसको वो हिंदुओं की व्यापक शक्ति तथा जनसंख्या का बहुमत मानते हैं। उनके अनुसार पारंपरिक पाठों में ब्राह्मणों की विचारधारा को प्रमाणित किया हुआ है तथा इन्हें जीवन के सिद्धांत के रूप में अपनाया गया है, यह ज्यादातर भारतीय जनसंख्या के जीवन को एक अर्थ प्रदान करता है, अतः इसे भारतीय एकता का एक महत्त्वपूर्ण बिंदु माना गया है। ब्राह्मणवादी विचारधारा के महत्त्वपूर्ण तत्व हैं—कर्म और देह धारण की विचारधारा, धर्म की अवधारणा, ब्राह्मण और रीति-रिवाज से संबंधित कर्म विन्यास पर आधारित व्यवस्था। यह ब्राह्मणवाद की संस्कृति ही थी, जिसने वंशवाद द्वारा इस्लामिक शासन के दौरान शासकों को संरक्षण दिया। एम्ब्री के अनुसार जो दूसरा पहलू है वो भारतीय सभ्यता के विषय में है अर्थात् इसका राजनीतिक-ऐतिहासिक पहलू, जोकि बाह्य शक्ति इस्लामिक और यूरोपियन के कारण बनता है—यह भारतीय सभ्यता को एकीकृत करने वाली उपनिवेशवादी और राष्ट्रवादी कल्पना शक्ति के विरुद्ध जाता है। राष्ट्रवादियों का मानना है कि भारतीय इतिहास के सृजनकर्ता मौर्या और गुप्ता शासक रहे हैं। यह तथ्य उस बात का खंडन करता है जो कहते हैं कि भारतीय राजनीतिक एकता का कारण औपनिवेशवाद है। एम्ब्री के मतानुसार भारतीय सभ्यता के एकीकरण का मूल कारण ब्राह्मणवादी व्यवस्था और उपनिवेशवाद है। एम्ब्री के विचार से ब्राह्मणों की विचारधारा तथा बाहरी देशों के हस्तक्षेप के कारण ही यहाँ पर क्षेत्रवाद की उत्पत्ति हुई। यूरोप में स्थिति इससे अलग थी, वहाँ लगभग 25 राष्ट्र राज्य हैं। यूरोपियन चर्च से बिल्कुल अलग भारतीय ब्राह्मणवादी परंपरा राजा को सार्वभौमिक व्यवस्था के केंद्र में रखती है।

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. निम्न वाक्यों को पूरा करें—

(i) सांस्कृतिक संचार में संलग्न है.....

(ii)और.....दो प्रसिद्ध सामाजिक मानववैज्ञानिक भारतीय सभ्यता के सांस्कृतिक वार्तालाप तरिका में संलग्न हैं।

(iii) भारतीय सभ्यता को एक प्रकार के रूप में वर्गीकृत करने पर.....लागू होता है अपेक्षाकृत उन पहलुओं की जांच पर जोर देता है जो कि भारतीय समाज की संरचना के लिए अलग और अनोखे हैं।

उत्तर—(i) वह मार्ग/प्रक्रिया जिससे सभ्यता के तत्व समाज के अनेक स्तरों से हस्तांतरित और संचारित किये जाते हैं।

(ii) मैकिम मैरियट और राबर्ट रेडफिल्ड।

(iii) अन्य समाज और संस्कृति से तुलना जो समानता दर्शाती हो।

प्रश्न 2. भारतीय सभ्यता को समझने के लिए लक्षणों को सूचीबद्ध करना सांस्कृतिक आवश्यकता दृष्टिकोण से कैसे अलग है? तीन वाक्य में वर्णन करें।

उत्तर—भारतीय सभ्यता को समझने के लिए लक्षणों को सूचीबद्ध करने के अंतर्गत उन संस्थानों, लक्षणों तथा गुणों के अभिलेखन पर जोर दिया जाता है जो निश्चित रूप से भारतीय माने जाते हैं। भारत विविधताओं का देश है, ये विविधताएं भौगोलिक, पारिस्थितिक, क्षेत्रीय या धार्मिक हो सकती हैं। इस दृष्टिकोण में भारतीय विभिन्नताओं की सूची बनाने पर जोर दिया जाता है। जबकि सांस्कृतिक आवश्यकता दृष्टिकोण यह बताता है कि भारतीय सभ्यता का आभास इसकी संस्कृति से होता है जो सदियों पुरानी है तथा जिसे मापा नहीं जा सकता। सांस्कृतिक गुण भारतीय सभ्यता की पहचान है जो इसे अन्यो से अलग करती है, जैसे—‘अनेकता में एकता’, सहिष्णुता और भाईचारा, धर्म और आध्यात्म। यह लोक-चरित्र है, जोकि अमूर्त है अतः इसे ना तो सूचीबद्ध किया जा सकता है और ना ही नापा जा सकता है।

प्रश्न 3. निम्न वाक्यों को पूरा करें।

(i) मानव निवास के लिए.....अगम्य और भौगोलिक रूप से कम सहायक है।

(ii) बहुवर्षीय (Perennial) केन्द्रीय क्षेत्र में संलग्न है.....।

(iii) मालवा एक विशेष उदाहरण प्रस्तुत करता है.....।

(iv) सामाजिक और सांस्कृतिक रूप में मार्गी क्षेत्र है.....।

उत्तर—(i) प्रासंगिक एकांत क्षेत्र।

(ii) बेसिन, समतल और डेल्टा।

(iii) मार्ग क्षेत्र का।

(iv) वो सब चित्रित हैं, ना कि अलग सांस्कृतिक और सामाजिक संरचना है।